देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
नवम्बर 2024
Vol.-20, Issue-5(1)
Impact Factor 7.523

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

वैश्वीकरण के दौर में बदलती सामाजिक व्यवस्था

विशेषांक सम्पादक :
डॉ. गीतू खन्ना,
डॉ. अमनदीप कौर

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग
एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

Scanned with OKEN Scanner

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 20 **ISSUE-5(1)** **(नवम्बर 2024)** **ISSN : 2395-7115**

हरियाणा साहित्य एवं संस्कृत अकादमी, पंचकूला

एवम्

गुरु नानक गर्ल्स कॉलेज यमुनानगर

बहुविषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के शोध पत्र

Scanned with OKEN Scanner

42.	वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में चित्रित विखण्डित होते जीवन मूल्य	मोनिका तालियान	228–234
43.	पं० लखमीचंद और पं० जगन्नाथ के लोक साहित्य में नारी सौंदर्य	नविता, डॉ. शर्मिला	235–238
44.	वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित दलित उद्भावना	निशिम नागर	239–242
45.	वैश्वीकरणसमये गीतानिष्ठसमाजतत्त्वविचारः	ओमप्रकाशदासः	243–246
46.	वैश्वीकरण का हाशिये पर स्थित दलित नारी पर प्रभाव	प्रदीप कुमार	247–251
47.	वैश्वीकरण के दौर में बदलता ग्रामीण जीवन	पवन कुमारी	252–256
48.	भूमंडलीकरण के दौर में हिन्दी उपन्यासों में अभिव्यक्त नौकरी और तनाव का अंतर्संबंध	प्रदुन कुमार	257–261
49.	भगवानदास मोरवाल के उपन्यास 'शकुंतिका' में नारी चेतना	प्रेमलता	262–266
50.	वैश्वीकरण के दौर में राजनैतिक मूल्यों का विघटन : महाभोज उपन्यास के सन्दर्भ में	रंजीता मिर्धा	267–271
51.	वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी कहानियों में चित्रित आदिवासी नारी जीवन	रीता देवी, डॉ. पिंकी पारीक	272–276
52.	वैश्वीकरण के दौर में स्त्री-कविता का उद्भव	समीक्षा दुबे	277–281
53.	वैश्वीकरण के दौर में दलित साहित्य	संगीता देवी	282–287
54.	वैश्वीकरण के दौर में हिंदी के विकास में अनुवाद की भूमिका	सतीश कुमार भारद्वाज	288–292
55.	वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में चित्रित विखण्डित होते जीवन मूल्य	शालिनी पाण्डेय	293–301
56.	**Globalization & Gender Inequality in Employment**	**Shammi Bajaj**	**302-307**
57.	वैश्वीकरण का महिलाओं पर प्रभाव	शिवानी शर्मा	308–310
58.	वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में चित्रित परिवर्तित होता पारिवारिक ढांचा	सुभाष चन्द	311–315
59.	उदय प्रकाश की कहानियों में उत्तर आधुनिकता	सुशील कुमार	316–320
60.	वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में चित्रित नारी की दशा	श्रीमती ऊषा देवी	321–326
61.	वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में चित्रित नारी की दशा	**Vikesh Bala**	**327-329**
62.	वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था	विशाखा	330–334
63.	गिरिराज शरण अग्रवाल के व्यंग्यों में चित्रित भ्रष्टाचार की समस्या	विशाल कुमार, प्रोफेसर (डॉ.) माया मलिक	335–340

Scanned with OKEN Scanner

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Nov. 2024 Page No. : 330-334
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में वर्णित वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था

विशाखा
सहायक प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र, गुरुनानक गर्ल्स कॉलेज, संतपुरा, यमुनानगर।

सारांश :-

वैश्वीकरण के कारण आज शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति आई है। जिसके कारण नए–नए शैक्षिक तकनीकों का शिक्षा में समावेश किया जा रहा है। जहाँ पहले शिक्षा केवल निश्चित पाठ्यक्रम के आधार पर दी जाती थी। आज वहीं पर शिक्षा प्रोजेक्ट, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के आधार पर प्रश्नोत्तर विधि, प्रदर्शन विधि आदि के माध्यम से दी जाने लगीं है जोकि विद्यार्थियों को सही ज्ञान व कौशल प्रदान करने में मदद करती है। वैश्वीकरण के माध्यम से ही शिक्षा की सर्व उपलब्धता संभव हुई है। शिक्षाकों सर्वसुलभ बनाने हेतु वैश्वीकरण आवश्यक है। वैश्वीकरण ने भारत और अन्य देशों के शैक्षणिक संस्थानों के बीच सहयोग को बढ़ावा दिया है जिस कारण निजीकरण को बढ़ावा मिला है। इसके अंतर्गत शिक्षा की संस्थाओं को अन्य देशों में स्थापित करने की योजना का निर्माण किया जाता है और शैक्षिक प्रशासन या शैक्षिक संगठन की स्थापना की जाती है जिससे शिक्षा के वैश्वीकरण द्वारा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की व्यवस्था करना आसान हो जाता है। यह वैश्वीकरण का ही परिणाम है कि आज राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत की शिक्षा गुणवत्ता की वैश्विक मान्यताओं को बढ़ाने और नए क्षितिज के द्वार खोलने के लिए तैयार है।

बीज शब्द :- वैश्वीकरण, शिक्षा, तकनीकी, कौशल।

प्रस्तावना :-

वैश्वीकरण 21वीं सदी की सबसे महत्वपूर्ण और प्रभावशाली प्रक्रियाओं में से एक है, जिसने विश्व के लगभग हर क्षेत्र को प्रभावित किया है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था भी इस प्रक्रिया से अछूती नहीं रही। वैश्वीकरण के कारण दुनियाभर के देश, समाज, और संस्थान आपस में और अधिक जुड़ गए हैं, जिससे न केवल आर्थिक और सांस्कृतिक आदान–प्रदान हुआ, बल्कि शिक्षा व्यवस्था में भी बड़े बदलाव देखने को मिलें हैं। वैश्वीकरण के कारण भारतीय शिक्षा व्यवस्था में कई सकारात्मक बदलाव आए हैं। अंतर्राष्ट्रीय मानकों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार की आवश्यकता महसूस की गई, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षण विधियों में आधुनिक तकनीकों और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के पाठ्यक्रमों का समावेश हुआ। अब भारतीय विश्वविद्यालय और शैक्षणिक संस्थान वैश्विक रैंकिंग में स्थान प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं, जिससे शिक्षा का स्तर सुधरा है।

Scanned with OKEN Scanner

वैश्वीकरण का भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव :-

वैश्वीकरण के कारण भारतीय शिक्षा व्यवस्था में अनेक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। वैश्वीकरण के परिणाम स्वरूप उच्च शिक्षण संस्थानों में विदेशी संस्थानों की भागीदारी बढ़ने के कारण शिक्षण संस्थानों की संख्या में वृद्धि हुई है। चैरिटेबल ट्रस्टों द्वारा भी निजी शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की जा रही है। जिससे भारत के युवा वर्ग को शिक्षा प्राप्त करने के अधिक अवसर एवं विकल्प उपलब्ध हो रहे हैं। इसकी मदद से छात्रों को उच्च शिक्षा आसानी से उपलब्ध हो रही है जिसके कारण उच्च शिक्षा प्राप्त करने लोगों की संख्या में दिन प्रतिदिन वृद्धि हो रही है। वैश्वीकरण के कारण भारतीय शिक्षा व्यवस्था में कई सकारात्मक बदलाव आए हैं। अंतरराष्ट्रीय मानको की साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार की आवश्यकता महसूस की गई। जिसके परिणाम स्वरूप शिक्षण विधियों मैं आधुनिक तकनीकी और अंतरराष्ट्रीय स्तर के पाठ्यक्रमों का समावेश हुआ अब भारतीय विश्वविद्यालय और शैक्षणिक संस्थान वैश्विक रैंकिंग में स्थान प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं जिससे शिक्षा का स्तर सुधरा है। वैश्वीकरण ने तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा के महत्व को और अधिक बढ़ा दिया है।

आज की प्रतिस्पर्धात्मक दुनिया में केवल पारंपरिक शिक्षा से रोजगार के अवसर प्राप्त करना कठिन हो गया है। इसलिए, तकनीकी और व्यावसायिक कौशल पर जोर दिया जाने लगा है। कई भारतीय संस्थानों ने अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से विभिन्न तकनीकी और प्रबंधन पाठ्यक्रम शुरू किए हैं, जो छात्रों को वैश्विक नौकरी बाजार में प्रतिस्पर्धा करने के लिए तैयार करते हैं। वैश्वीकरण सूचना प्रौद्योगिकी और संचार की सीमाओं को आगे बढ़ाने के लिए उपयोग और मान्यता को बढ़ावा देता है। इससे विद्यार्थियों का ज्ञान प्राप्त होता है और उनकी उपयोग करने की क्षमता में सुधार होता है। साथ ही, शिक्षा में वैश्वीकरण की शुरुआत ने छात्रों को महान टीम प्लेयर बनाया है जो कि दल में ग्रुप काम कर सकते हैं, जिससे वे भविष्य के लिए तैयार हो सकें।

वैश्वीकरण के कारण अब भारतीय छात्रों के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा प्राप्त करने के अवसर बढ़ गए हैं। छात्र अब विभिन्न देशों में उच्च शिक्षा के लिए आवेदन कर सकते हैं, जिससे वे वैश्विक दृष्टिकोण और विविध संस्कृतियों के संपर्क में आते हैं। इसके साथ ही, भारत में भी विदेशी विश्वविद्यालयों की शाखाएं स्थापित हो रही हैं, जो छात्रों को अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा प्राप्त करने के लिए नए विकल्प प्रदान करती हैं। इसके अतिरिक्त युवाओं में विशेष कौशल का विकास करने में भी वैश्वीकरण ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। वर्तमान में केवल इंजीनियरिंग चिकित्सा के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि संगीत नृत्य पेंटिंग आदि से संबंधित विभिन्न कौशल से युक्त व्यक्ति पूरे विश्व स्तर पर ख्याति अर्जित कर चूके हैं। वैश्वीकरण के कारण हमारे सामने एक विश्व भाषा के रूप में अंग्रेजी उभर कर आई है जिसकी सहायता से हमें दूसरे देश के लोगों के साथ संबंध स्थापित करने में आसानी होती है। और मीडिया के माध्यम से भी हम वहां की घटनाओं के बारे में आसानी से समझ सकते हैं जो कि सिर्फ एक विश्व भाषा होने की वजह से संभव हो पाया है।

वैश्वीकरण के कारण विद्यार्थियों को शोध व अध्ययन करते समय पूरे विश्व में सर्वोत्तम सामग्री का चयन करने का अवसर मिलता है। युवाओं को अपने भौतिक क्षेत्र से परे अंतर–क्षेत्रीय संबंध बनाने का अवसर मिला। युवाओं के पास अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार जैसे अंतर्राष्ट्रीय मूल्यों के अनुरूप पश्चिमी प्रथाओं और अन्य प्रथाओं को अपनाने के अवसर हैं।

भारत में विदेशी विश्वविद्यालयों से भी छात्र और देश लाभान्वित हो सकते हैं। छात्रों और उनके

Scanned with OKEN Scanner

अभिभावकों को न केवल उनके अधिक बोझ से आंशिक रूप से राहत मिलेंगे बल्कि देश का दिमागी पलायन भी कम होगा। हमारे युवाओं को यहाँ विदेशी विश्वविद्यालय की डिग्री प्राप्त होने से मनोवैज्ञानिक संतुष्टि मिलेंगे और उसके बाद वे घरेलू मोर्चे पर जीवन का आनंद उठा कर देश की सेवा में योगदान दे सकेंगे। फिर से हम अपने देश में कुछ उन्नत स्नातकोत्तर तकनीकी और अन्य व्यवसायिक पाठ्यक्रमों के लिए प्रवेश सुविधा और बुनियादी ढांचे की आवश्यक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इतने सुसज्जित नहीं है। भारत में एक विदेशी विश्वविद्यालय की स्थापना को प्रोत्साहित करने से देश की उत्कृष्टता के विश्व स्तरीय संकाय के मौजूदा खतरे और शिक्षण और सीखने की पद्धति से विभिन्न सुधारों का लाभ मिलेगा। हम अपने संस्थानों और विश्वविद्यालय में एक शोध संस्कृति विकसित करने में भी सक्षम होंगे जिसकी हमारे पास कमी है। इस तकनीकी युग में भारत के लोग बहुत ही महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहे हैं। कुछ ऐसे विकास के चरण के रूप में प्रभावित हैं और अन्य भारतीय प्रणाली के अवमूल्यन के रूप में सख्ती से मानते है।

वैश्वीकरण का भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव :-

वैश्वीकरण ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था में कई सकारात्मक बदलाव लाए हैं, लेकिन इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। इन प्रभावों ने शिक्षा के क्षेत्र में कई चुनौतियाँ उत्पन्न की हैं, जिन्हें समझना और समाधान निकालना आवश्यक है। वैश्वीकरण का महत्वपूर्ण प्रभाव भारतीय शिक्षा व्यवस्था में देखा गया है, जो है भारतीय भाषाओं और संस्कृति पर। अंग्रेजी भाषा का महत्व बढ़ा है, जो एक ओर तो वैश्विक संचार के लिए आवश्यक है, लेकिन दूसरी ओर इससे भारतीय भाषाओं और संस्कृति पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ सकता है। कई बार यह देखा गया है कि पारंपरिक ज्ञान और संस्कृतियों को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में उतनी प्राथमिकता नहीं दी जा रही है, जितनी दी जानी चाहिए। वैश्वीकरण के कारण भारतीय शिक्षा प्रणाली में पश्चिमी मॉडल का प्रभाव बढ़ा है, जिससे भारतीय भाषाओं और सांस्कृतिक मूल्यों की उपेक्षा हो रही है। अंग्रेजी को प्राथमिकता देने से भारतीय भाषाओं की महत्ता कम हो गई है, जिससे स्थानीय भाषाओं और पारंपरिक ज्ञान का क्षरण हो रहा है। इसके परिणाम स्वरूप, नई पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक और भाषाई पहचान से दूर होती जा रही है।

वैश्वीकरण के चलते शिक्षा का व्यावसायीकरण तेजी से बढ़ा है। उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करना अब महंगा हो गया है, जिससे समाज के गरीब और पिछड़े वर्गों के लिए शिक्षा प्राप्त करना कठिन हो गया है। निजी और अंतर्राष्ट्रीय स्कूलों और विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करना केवल आर्थिक रूप से सक्षम वर्गों के लिए संभव हो पाया है, जिससे शिक्षा में असमानता और बढ़ गई है। वैश्वीकरण के कारण भारतीय शिक्षा प्रणाली में पश्चिमी पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों का वर्चस्व बढ़ा है, जिससे पारंपरिक और स्थानीय ज्ञान प्रणाली को पर्याप्त महत्व नहीं दिया जा रहा है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली, जो कि नैतिकता, ध्यान, और योग जैसे विषयों पर आधारित थी, अब हाशिये पर चली गई है। इससे छात्रों में नैतिक मूल्यों और भारतीय सांस्कृतिक धरोहर के प्रति जागरूकता की कमी हो रही है। वैश्वीकरण के चलते शिक्षा में अत्यधिक प्रतिस्पर्धा का माहौल बन गया है। छात्रों पर अच्छे अंक लाने और उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करने का दबाव बढ़ गया है, जिससे उनमें मानसिक तनाव और अवसाद जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। इस प्रतिस्पर्धा के कारण शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार पाने तक सीमित हो गया है, जिससे समग्र व्यक्तित्व विकास की उपेक्षा हो रही है।

Scanned with OKEN Scanner

वैश्वीकरण के कारण शिक्षा का व्यवसायीकरण तेजी से बढ़ा है। अब शिक्षा एक सेवा के रूप में बेची जा रही है, जिससे इसका मूल उद्देश्य कहीं न कहीं खो गया है। निजी शिक्षण संस्थानों की बढ़ती संख्या और उनकी उच्च शुल्क संरचना ने शिक्षा को एक व्यावसायिक उत्पाद बना दिया है, जिससे इसे आमजन तक पहुँचाना कठिन हो गया है। वैश्वीकरण के कारण शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच शिक्षा के स्तर में बड़ा अंतर पैदा हो गया है। शहरी क्षेत्रों में जहाँ आधुनिक तकनीक और संसाधनों की उपलब्धता के कारण शिक्षा का स्तर ऊँचा हो रहा है, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी बुनियादी सुविधाओं और योग्य शिक्षकों की कमी है। इस खाई के कारण ग्रामीण छात्रों के लिए वैश्विक प्रतिस्पर्धा में बने रहना कठिन हो गया है।

निष्कर्षः वैश्वीकरण ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था को नए आयाम दिए हैं और इसे वैश्विक मानकों के अनुरूप ढालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वैश्वीकरण ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर गहरा प्रभाव डाला है, जिसमें कई सकारात्मक और नकारात्मक पहलू शामिल हैं। एक ओर, वैश्वीकरण ने शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार किया, आधुनिक तकनीक और अंतर्राष्ट्रीय मानकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया, और छात्रों को वैश्विक अवसरों के लिए तैयार किया। इसके परिणामस्वरूप, भारतीय शिक्षा प्रणाली अधिक प्रतिस्पर्धी और प्रासंगिक हो गई है। अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और शिक्षा में नवाचार ने भारतीय छात्रों के लिए नए दरवाजे खोले हैं, जिससे उन्हें वैश्विक स्तर पर उत्कृष्टता प्राप्त करने का अवसर मिला है।

दूसरी ओर, वैश्वीकरण के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। शिक्षा का व्यावसायीकरण, असमानता में वृद्धि, और पारंपरिक ज्ञान व संस्कृतियों का ह्रास जैसे मुद्दे भी उभरकर सामने आए हैं। उच्च शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा की बढ़ती लागत ने आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए शिक्षा तक पहुंच को कठिन बना दिया है। इसके अलावा, शिक्षा में अत्यधिक प्रतिस्पर्धा और मानसिक दबाव ने छात्रों में तनाव और अवसाद जैसी समस्याओं को बढ़ावा दिया है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में वैश्वीकरण के प्रभाव को समझते हुए, यह आवश्यक है कि हम शिक्षा प्रणाली को अधिक समावेशी, सुलभ और संतुलित बनाने के लिए लगातार प्रयास करें। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन और रोजगार प्राप्त करना नहीं होना चाहिए, बल्कि नैतिकता, सांस्कृतिक पहचान, और समग्र व्यक्तित्व विकास को भी समाहित करना चाहिए। भारतीय शिक्षा प्रणाली को अपनी सांस्कृतिक और भाषाई जड़ों को संरक्षित रखते हुए, वैश्विक मानकों के अनुरूप ढालना होगा, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ न केवल सफल पेशेवर बन सकें, बल्कि अपनी संस्कृति और समाज के प्रति संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक भी बन सकें।

इसलिए, वैश्वीकरण के इस युग में, भारतीय शिक्षा व्यवस्था को एक ऐसे संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें वैश्विक दृष्टिकोण और स्थानीय आवश्यकताओं के बीच तालमेल हो। ऐसा करके ही हम एक मजबूत, समृद्ध, और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध शिक्षा प्रणाली का निर्माण कर सकते हैं जो भारत को वैश्विक मंच पर और भी अधिक गौरवान्वित कर सके।

संदर्भ सूची :-

1. कैलाश सत्यार्थी, "शिक्षा और वैश्वीकरण : चुनौतियां और संभावनाएं।" (पुस्तक)
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय की रिपोर्ट।

Scanned with OKEN Scanner

3. संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (UNESCO) की रिपोर्टें' शिक्षा और वैश्वीकरण के प्रभाव पर।
4. Government of India (1997-2002). Approach Paper to The Ninth Five Year Plan : Planning Commission, New Delhi.
5. भारतीय समाज और शिक्षा, रामचंद्र गुहा द्वारा, (लेख और शोध पत्र)
6. Green A. 'Education, globalization, and the nation State's in Lauder H, Brown P, Dillabough J, and Halsey A H (eds) Education, globalization and social changex Oxford : Oxford University Press, 2006

Vishakhamalik062@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner